फोटो– अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

लाइब्रेरी : बदलाव की ओर एक कदम

– दीपा बिष्ट

किताबों में एक दुनिया होती है। हर किताब में एक खुशबू होती है और लाइब्रेरी में यह दुनिया, यह खुशबू समाई होती है। बच्चों को इस दुनिया से जोड़ना जरूरी है। लाइब्रेरी भी अब बदलने लगी हैं। खुद चलकर बच्चों तक पहुंच रही हैं।

आमतौर पर हम लाइब्रेरी शब्द को कुछ इस तरह से लेते हैं जहां पर विभिन्न प्रकार की ऐसी पुस्तकों का भंडार हो जहां से ज्ञान मिलता है। जहां उठने–बैठने के कुछ नियम होते हैं। आने–जाने के कुछ नियम होते हैं। यदि अपने बचपन को याद करती हूं तो मैंने एक साधारण से स्कूल में 12वीं तक पढ़ाई की है। उस समय हमारे स्कूल में लाइब्रेरी थी ही नहीं। आगे की पढ़ाई प्राइवेट करने से लाइब्रेरी के दर्शन देर से हुए। अभी तक लाइब्रेरी मेरे लिए एक हौव्वा रही। नैनीताल की लाइब्रेरी में पहली बार किताबें देखने पर मैं बहुत हैरान हुई। वहां किताबें लेने के नियम के तहत मैं अधिक किताबें नहीं ले पाई।

जब मैंने अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ज्वॉइन किया तो मुझे किताबें पढ़ने को मिलीं। तब पहली बार पुस्तकालय तक पहुंच मुझे बहुत आसान लगी। तब मुझे लगा कि काश! हर बच्चे तक लाइब्रेरी पहुंचाने में हम मदद कर पाते जिसमें कोई नियम नहीं, कोई परीक्षा की तैयारी वाली किताबें नहीं बल्कि अपने इच्छा से मनचाही किताब लें। इस क्रम में घुमक्कड़ लाइब्रेरी बहुत उपयोगी सिद्ध हुई।

घुमक्कड़ लाइब्रेरी के तहत हमने कुछ इस तरह का काम करने की कोशिश की। हम अपने झोले में कुछ 40–50 किताबें ले जाते। उसको बच्चों के साथ साझा करते। हम कोशिश करते कि जो भी किताब हमारे थैले से निकले वह सिर्फ आनंद दे, जिसका कोई पेपर नहीं होने वाला। जिसमें हंसने, मजे करने, चित्र देखने उनके बारे में बातचीत करने के मौके मिलें। जो भी देखें, पढ़े अपनी मर्जी से। इन किताबों के छूने से उनके फटने या ख़राब होने का खतरा न हो। उनके फटने पर टीचर की डांट न खानी पड़े।

इसी तरह मैंने दो स्कूल ऐसे पाए जहां मैंने अलग–अलग तरह के बदलाव देखे। पहला स्कूल राजकीय प्राथमिक विद्यालय डूंगरपुर, जो हरिपुर बच्ची संकुल के अंतर्गत आता है। इस स्कूल में दो टीचर्स थे जिनमें एक ओखलकांडा ब्लॉक से ट्रांसफर होकर आई और एक टीचर पहले से ही थीं। ये टीचर हमेशा यही कहती थीं कि बच्चों को पढ़ने–लिखने में कोई रुचि नहीं है। यहां मैं अक्टूबर 2018 में गयी। उस समय स्कूल में बच्चों के पास कोर्स के सिवाय कोई अन्य किताबें नहीं थीं। मैंने जब टीचर से बात की कि वे बच्चों को कोर्स के अलावा कुछ अन्य किताबें देना पसंद करेंगी तो उनका साफ कहना था कि उनको पढ़ना आता ही कहां है। अपना कोर्स तो पूरा कर नहीं पाते और किताबें क्या पढ़ेंगे? मैंने बोला मैडम अगर मैं अपनी कुछ किताबों का झोला यहां बच्चों को पढ़ने को दूं तो आप अनुमति देंगी?

टीचर– देखो मैडम ये बच्चे अगर आपकी किताबें फाड़ें, खो दें या फाड़ दें, तो मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी ?

मैं–मैडम बच्चे ऐसा नहीं करेंगे इसकी जिम्मेदारी मेरी है। यदि मेरी किताबें ख़राब भी हुई तो इसके लिए कोई दोषी नहीं होगा। उस दिन मैंने मैडम के सामने स्टोरी टेलिंग का डेमो भी दिया।

अब मैंने अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में थैला वहां रखा। मैं जानती थी कि बच्चे पढ़ने को लालायित हैं। स्कूल में रूम टू रीड की किताबें भी हैं पर मैडम की अलमारी में बंद हैं। अब बच्चे मेरी रखी हुई किताबें पढ़ते, मेरी किताबें उनको घर ले जाने की भी अनुमति थी। वे स्वयं किताबें लेते, अपनी कॉपी में चढ़ाते, जो किताब वे स्कूल में पढ़ते उसको स्कूल और जो घर ले जाते उसके आगे 'घर ले गए' लिख देते। धीरे–धीरे बच्चे कई किताबें पढ़ते और उनके चित्र बनाते। मैं बीच–बीच में देखने जाती और पढ़ी हुई किताबों के बारे में पूछती। बच्चे उत्साह से मुझे बताते और अपनी कॉपी के पीछे लिखा ब्यौरा भी मुझे दिखाते ,एक बच्चे दानवीर ने सिर्फ घर में पढ़ी किताबें ही लिखी थीं। पूछने पर पता चला कि उसको पढ़ने में कठिनाई होती है। इसलिए स्कूल में पढ़ने में उसको शर्म महसूस होती है।

बच्चों ने कहा– आपके झोले की किताबें हमने पढ़ लीं। अब हमारे लिए नयी किताबें लाना। मैं नयी किताबें ले गयी। बच्चों ने मुझे बताया कि उनकी मैडम की अलमारी में भी बहुत किताबें हैं। यदि आप कहेंगी तो मैडम अपनी अलमारी से वे किताबें निकाल सकती हैं। मैंने मैडम से बात की।

मैं–मैडम, आपने देखा कि पिछले एक महीने से ये बच्चे किताबें पढ़ रहे हैं, चित्र देखते, चित्र बनाते, घर ले जाते और सारा काम ये खुद ही करते हैं और किसी ने किताब फाड़ी भी नहीं। अब आप मेरी और इनकी थोड़ी मदद और कर दीजिये।

मैडम –देखो मेरे पास विभागीय काम रहता है, मैं आपकी कैसे मदद करूं ?

आप बस हर रोज स्कूल में पढ़ने के लिए बच्चों को एक घंटा समय दे दीजिये और अलमारी की कुछ किताबें पढ़ने को दे दीजिये, बच्चे रोज कुछ पढ़ेंगे और असेंबली में भी सुनायेंगे।

मैडम –यदि ये किताबें फटीं तो क्या होगा ?

मैं–मैडम, तीन साल से आपकी ये किताबें बंद और साफ हैं यदि इनको बच्चे पढ़ लेंगे तो इनका उपयोग अच्छा ही होगा क्योंकि किताबें तो होती ही पढ़ने के लिए हैं और बच्चे द्वारा किताबें ख़राब नहीं होंगी यह मेरा विश्वास है।

उन दिनों मैडम स्कूल में अकेली थीं। उनकी सहायक एक महीने की छुट्टी पर थीं। तब मैडम ने लंच के बाद का समय पढ़ने के लिए दे दिया। अब बच्चे असेंबली में भी पढ़ी कहानी सुनाने लगे। इस तरह से उनकी अलमारी से किताबें बाहर आकर बच्चों के हाथों तक पहुंचीं।

अब स्कूल में बच्चों ने कई किताबें देखीं, खोलीं और उनमें बने चित्र भी देखे। जब सर्दियों की छुट्टी से पहले मैं स्कूल गयी तो मैडम ने बताया कि बच्चे किताब पढ़ते और सुनते हैं, सुनाते हैं तथा चित्र बनाते हैं अब इनके पढ़ने में मात्राओं की गलती कम दिखती है। मैडम, बच्चों के काम से खुश थीं।

मुझे कई बातों की खुशी थी। किताबें अलमारी से बाहर बच्चों तक पहुंची, मैडम ने बच्चों को पढ़ने का समय दिया। बच्चों ने किताबों को संभालकर रखा। रजिस्टर में दर्ज किया पर सबसे अधिक खुशी मुझे दानवीर को देखकर हुई।

दानवीर–मैडम बचपन से ही मेरी जुबान लगती है इसलिए जब भी मैं पढ़ता तो मेरी जुबान लगने से बच्चे मेरी मजाक बनाते थे। मैं धीरे–धीरे पीछे होता गया। जब आप किताब लेकर आये तो भी मैं उनको सिर्फ देखता ही था क्योंकि पढ़ने में सब मजाक बनाते। तब मैंने सोचा कि घर ले जाने को तो मैडम ने कहा है। मैं किताबें घर ले जाने लगा। मैं अपने घर में डेली किताब ले जाता और पढ़ता। धीरे–धीरे मुझे मजा आने लगा क्योंकि अब मुझे सबके सामने पढ़ने में कोई झिझक नहीं होती। मैं सबके सामने किताब पढ़कर सुनाना चाहता हूं। उस दिन उसने अपने स्कूल की अलमारी से किताब निकालकर पढ़ी, उसने बहुत अच्छे से पढ़ा तो सभी बच्चों ने, मैंने और टीचर्स ने उसके लिए ताली बजायी। उसके भीतर जो आत्मविश्वास आया उससे मुझे सच्ची खुशी मिली।

दूसरा उदाहरण, मैं राजकीय प्राथमिक विद्यालय धनपुर का देना चाहती हूं जहां पर दो टीचर्स हैं। यह स्कूल भी हरिपुर बच्ची संकुल का है। यहां मैं अप्रैल 2019 में गयी। यहां पर रूम टू रीड की किताबें हैं जो अब पुरानी हो चुकी थीं बच्चे उनसे देखकर सिर्फ चित्र बनाते थे। टीचर्स को बाल साहित्य का पता नहीं था।

मैं पहली बार जब स्कूल में गयी तो कुछ किताबें अपने

थैले में लेकर गयी। बच्चों के साथ काम किया दोनों टीचर्स साथ में बैठे थे और बच्चों की प्रतिक्रियाओं को सुन रहे थे। अब उन्होंने कहा कि हमारे पास तो अब किताबें नहीं हैं पर क्या आप कुछ किताबें यहां हमको दे सकते हो? मैंने सहमति के साथ वह किताबें वहीं छोड़ दीं और मैडम से कहा कि आप रोज बच्चों को कुछ समय देना जिससे वे किताबें पढ़ सकें। जब ये किताबें बच्चे पढ़ लें तो मुझे बताना मैं ये किताबें वापस ले जाऊंगी और नयी किताबें लेकर आऊंगी। इस तरह स्कूल में बच्चों को किताबें दी जाने लगीं।

स्कूल में शोभा मैडम ने यह जिम्मेदारी ली। वे रोज लंच से पहले बच्चों को किताबें देतीं, रजिस्टर में नोट करती और वापस लेकर उससे पढ़ी कहानी सुनतीं। यह क्रम इसी तरह चलता रहा। जब मैं अगले सप्ताह स्कूल में गयी तो बच्चों ने अपनी पढ़ी किताब का नाम और उसके भीतर की कहानी सुनाई। जब मैंने बच्चों से पढ़ी कहानी लिखने को कहा तो बच्चों ने लिखकर दिखाई। इससे उनकी हेड मैडम राजी मल इतनी खुश हुई कि वे हर बच्चे के लिए एक एक नोटबुक लेकर आई जिसमें उनको अपनी पढ़ी कहानी लिखनी होती थी। अब डेली कहानी पढ़ने और उसके बारे में लिखने का क्रम शुरू हो गया।

इस प्रक्रिया में टीचर्स ने पाया कि बच्चे नियमित स्कूल आने लगे और उनके पढ़ने–लिखने के स्तर में धीरे–धीरे परिवर्तन देखने को मिल रहा था। यह बात उन्होंने मुझे बताई। इसके बाद उन्होंने हमसे 5000 रुपये की किताबें मंगवाईं। किताबें अब खुश हैं वो बच्चों के हाथों में पहुंचने लगी हैं। बच्चे भी खुश हैं कि उनकी दुनिया में किताबों का जादू शामिल हो गया है।

(लेखिका, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड से जुड़ी हैं)

कौन सिखाता है चिड़ियों को

कौन सिखाता है चिड़ियों को
चीं-चीं, चीं-चीं करना?
कौन सिखाता फुदक-फुदक कर
उनको चलना फिरना?
कौन सिखाता फुर्र से उड़ना
दाने चुग-चुग खाना?
कौन सिखाता तिनके ला-ला कर
घोसले बनाना?
कौन सिखाता है बच्चों का
लालन-पालन उनको?
माँ का प्यार, दुलार, चौकसी
कौन सिखाता उनको?
कुदरत का यह खेल,
वही हम सबको, सब कुछ देती।
किन्तु नहीं बदले में हमसे
वह कुछ भी है लेती।
हम सब उसके अंश कि जैसे
तरू-पशु–पक्षी सारे।
हम सब उसके वंशज जैसे
सूरज-चांद-सितारे।

- द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

(साभार- कविता कोश)